Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

कोल जनजाति में सामाजिक गतिशीलता एवं शिक्षा

(हनुमना विकासखण्ड, जिला रीवा, मध्य प्रदेश के विषेश संदर्भ में)

डॉ. शाहेदा सिद्दिकी
प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शा0 ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्याल, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

Article Info

Accepted : 02 Feb 2025
Published : 20 Feb 2025

Publication Issue :
January-February-2025
Volume 8, Issue 1

Page Number : 234-240

सारांश– वर्तमान समय में कोल जनजातीय समाज में गतिशीलता विभिन्न कारकों के माध्यम से परिलक्षित हो रही है। इस संदर्भ में ब्रूत तथा सेल्जनिक ने सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले पाँच कारकों का उल्लेख किया है जिनमें व्यावसायिक एवं आर्थिक संरचना में परिवर्तन, सन्तानोत्पत्ति की दर में अन्तर आना, प्रवासी लोगों का केन्द्रीयकरण, शिक्षा में वषद्धि तथा लोगों की महत्वाकांक्षा में वृद्धि सम्मिलित है जिनमें से कोल जनजातीय समाज में शिक्षा का प्रभाव महत्वपूर्ण है। इन परम्परागत समाजों में शिक्षा संस्कृति की सामान्य विषेशताओं और व्यक्तित्व के आधारभूत लक्षणों के हस्तान्तरण का प्रमुख माध्यम रही है। शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता का परस्पर संबंध बहुआयामी है, जो शिक्षा की गुणवत्ता, सामाजिक पृष्ठभूमि, उच्च शिक्षा तक पहुंच और आर्थिक असमानताओं जैसे कारकों से आकार लेता है। शिक्षा सशक्तिकरण का आधार है किन्तु असमान पहुंच, आर्थिक बाधाएं और रोजगार असमानताएं जैसी चुनौतियां इसकी परिवर्तनकारी क्षमता में बाधा डालती हैं। समतापूर्ण समाज को बढ़ावा देने में शिक्षा की वास्तविक शक्ति को उजागर करने के लिए गतिशीलता को समझना महत्वपूर्ण है। सामाजिक गतिशीलता सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन को दर्शाती है। इस प्रकार का परिवर्तन समाज में व्यक्ति एवं समूह दोनों अथवा दोनों में से किसी एक की प्रस्थिति में हो सकता है। अतः प्रस्तुत शोधपत्र में सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन आर्थिक प्रस्थिति, सामाजिक प्रस्थिति तथा सांस्कृतिक प्रस्थिति पर शिक्षा के प्रभाव के अंतर्गत किया गया है जिसके लिए अध्ययन क्षेत्र के रूप में जिला रीवा निवासित कोल जनजाति का चयन किया गया है।

मुख्य शब्द – मूल्य, प्रस्थिति, सामाजिक गतिशीलता, नवीन पीढ़ी आदि।

प्रस्तावना– एक जनजाति अनेक परिवारों के एक समूह का एक संकलन होता है, जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक निश्चित भू–भाग पर रहते हैं, सामान्य भाषा बोलते हैं और विवाह या उद्योग के विषय में कुछ निशेधों का पालन करते हैं और एक निश्चित एवं उपयोगी आदान–प्रदान का परस्पर विकास करते हैं। डा. मजूमदार के यह शब्द जनजाति की सम्पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। आदिम समाजों में अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से सम्पूर्ण जीवन–शैली, मूल्यों, आदर्शों एवं व्यवहार प्रतिमानों का हस्तान्तरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक किया जाता रहा है जो कि व्यक्ति व समूह की प्रस्थिति को परिवर्तित भी करती है, परन्तु आध ुनिक जटिल समाज में शिक्षा एक औपचारिक व्यवस्था है। शिक्षण संस्थाएँ, निश्चित पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि ा और शैक्षणिक उद्देश्य के अनुरूप ज्ञान और कुशलता का हस्तान्तरण नवीन पीढ़ी को करती हैं। शिक्षा के इस बदलते स्वरूप के कारण जनजातीय समाजों में पर्याप्त गतिशीलता परिलक्षित होती रही है। शिक्षा आदिकाल से ही भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का अतयंत महत्वपूर्ण अंग रही है। अत वर्तमान में विभिन्न जनजातियों के उतीान में शिखा का स्थान अद्वितीय है। जनजातीय समाज में शिखा का स्वरूप व प्रभाव पीढ़ी दर पीढ़ी परिवर्तित होता रहा है जिस कारण जनजातिया समाज में गतिशीलता परिलक्षित हुई है। अतः यह कहना उचित होगा कि

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

शिक्षा एक निश्चित समय अंतराल में परिवर्तित हो रहे गतिशील समाज को प्रभावित करने वाला मुख्य कारक है जिसका अध्ययन सामाजिक गतिशीलता के विभिन्न पक्षों के अंतर्गत किया जा सकता है।

सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

सामाजिक गतिशीलता से सम्बन्धित विषयों में आधारभूत प्रश्न यह उठता है कि विभिन्न समूहों में गतिशीलता निर्धारित करने का आधार क्या है? इस सन्दर्भ में विभिन्न समाजशास्त्रियों ने सामाजिक गतिशीलता के कारकों एवं परिणामों पर अनुसंधान हेतु एक सैद्धान्तिक संरचना प्रस्तुत की है। इसके अन्तर्गत समाजशास्त्री बर्नार्ड बारबर ने सामाजिक गतिशीलता और उसके विभिन्न चरों जैसे परिवार, शिक्षा, कार्य करने का संस्थान तथा राजनीतिक संस्थानों के बीच सह सम्बन्धों को मापने का प्रयत्न किया है। सामाजिक गतिशीलता का सम्बन्ध व्यक्ति या समूह के पद या स्थिति में परिवर्तन से होता है, जिसमें व्यक्तियों या समूहों का एक सामाजिक ढांचे से दूसरे सामाजिक ढांचे में संचरण होता है।[1] अतः सामाजिक गतिशीलता व्यक्तियों
या समूहों के निजी प्रयास पर ही आधारित नही होता है अपितु यह सामाजिक संरचना का भी प्रतिफल है। सामाजिक गतिशीलता की अवधारणा समाजशास्त्र के इतिहास में गहराई से निहित है। बीसवीं सदी के प्रारम्भ तक सामाजिक गतिशीलता द्वारा उठाए गए सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों ने ध्यान आकर्षित किया किन्तु उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भी विशेषताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित करने का प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण था। सामाजिक गतिशीलता में दिशा, समय और संदर्भ तीनों के ही तत्व निहित है।[2] दिशा की दृष्टि से प्रस्थिति में गतिशीलता ऊपर और नीचे की ओर या समानांतर हो सकती है। समय की दृष्टि से प्रस्थिति की भिन्नता एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हो सकती हैं।

यदि शिक्षा व सामाजिक गतिशीलता के परस्पर सम्बन्ध के संदर्भ में विश्लेषण करें तो, भारत में शिक्षा और
सामाजिक गतिशीलता के बीच परस्पर क्रिया एक रैखिक या एक समान प्रक्रिया नहीं है। इसके बजाय, यह अवसरों और बाधाओं का एक जटिल जाल है जो विभिन्न कारकों से सम्बन्धित है, जिसमें शिक्षा की गुणवत्ता, सामाजिक पृष्ठभूमि, उच्च शिक्षा तक पहुंच और सकारात्मक कार्रवाई से सम्बन्धित नीतियां सम्मिलित हैं।[3] ये तत्व सामूहिक रूप से यह निर्धारित करते हैं कि शिक्षा किस स्तर तक मूर्त सामाजिक गतिशीलता में परिवर्तित होती है। इस समीकरण में शिक्षा की गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरती है।[4] उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा व्यक्तियों को बेहतर नौकरियाँ सुरक्षित करने, उनकी आय अर्जित करने की क्षमता बढ़ाने और राष्ट्र के विकास में योगदान करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से सुसज्जित करती है। इसके विपरीत, खराब गुणवत्ता वाली शिक्षा गरीबी के चक्र को कायम रख सकती है और ऊपर की ओर गतिशीलता के अवसरों को सीमित कर सकती है।[5]

साहित्य समीक्षा

सन 1960 और 1970 के दशकों में सामाजिक शोधकर्ताओं का मुख्य विषय सामाजिक गतिशीलता था। इस कालखण्ड में समाज से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर गतिशीलता के सन्दर्भ में शोध हुए, जिनमें से अधि ाकांश अध्ययनों ने मजदूर वर्ग के इतिहास से सामान्य समाज को परिचित कराया।[6] हर्टन व हन्ट ने सामाजिक गतिशीलता को व्यक्ति अथवा समूह के एक सामाजिक प्रस्थिति से दूसरी सामाजिक प्रस्थिति में जाने की क्रिया के रूप में परिभाषित किया है। ए.आर. देसाई के मतानुसार, सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि से तात्पर्य परम्परागत विष्वास, वृद्धि आर्थिक, राजनैतिक तथा मनोवैज्ञानिक धारणाओं को त्यागकर व्यक्ति द्वारा नए मूल्यों एवं व्यवहार को अपनाने में अग्रसर होने से है। जबकि सामाजिक संरचना में परिवर्तन से तात्पर्य व्यक्ति के परम्परागत कार्यों में परिवर्तन से होता है जहाँ प्रदत्त के स्थान पर अर्जित पदों को महत्त्व दिया जाता है।[7] बेकर और थॉमस ने अंतर पीढ़ी गतिशीलता व असमानता के मध्य सम्बन्धों को विभिन्न निर्धारक तत्वों के अन्तर्गत विश्लेषित किया है। इन्होंने मानव द्वारा अर्जित पूंजी, सामाजिक समूह, कौशल, ज्ञान, सामाजिक समितियां, सामाजिक सम्बन्ध, पारिवारिक सहायता, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा अभिभावकों की आर्थिक स्थिति आदि को दो पीढ़ियों के मध्य गतिशीलता का मुख्य आधार माना है।[8] बोरजास जे. जार्ज (1991) ने अपने शोध पत्र में
यह विश्लेषित किया कि जातीय कौशल किस सीमा तक पीढ़ी दर पीढ़ी प्रसारित होते हैं। इनके अनुसार जातीयता मानव कौशल, पूंजी के संचय की प्रक्रिया में बाह्य रूप से कार्य करती है क्योंकि अगली पीढ़ी के कौशल माता–पिता के द्वारा गिये

गए कौशल शिक्षा तथा जातीय वातावरण की गुणवत्ता पर निर्भर करते हैं। दास, बलाई और सब्बा, दीपिका (2022) ने अपने शोध पत्र में शैक्षिक गतिशीलता का अध्ययन करने के लिए तीन पीढ़ियों को चिन्हित किया।[9] इनके अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले कारकों को विश्लेषित करना है। इनके अनुसार शैक्षिक गतिशीलता का तात्पर्य माता–पिता की शैक्षिक उपलब्धि का उनके बच्चे में स्थानांतरण से है। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च गतिशीलता माता–पिता के शिक्षा स्तर और बच्चों के शैक्षिक स्तर के बीच निम्न सम्बन्धों का परिणाम होगी जबकि कम गतिशीलता एक मजबूत सम्बन्ध को प्रदर्शित करेगी।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु कोल जनजाति का चयन किया गया है। कोल एक जनजाति विशेष का नाम है जो प्रमुख रूप से भारत में वास करते हैं। भारत के मात्र सात राज्यों मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश,
झारखंड, असम, पश्चिम बंगाल एवं छत्तीसगढ़ में इनकी आबादी पायी जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में मध्य प्रदेश में रीवा जिले के हनुमना विकास खंड में निवासित कोल जनजाति को चिन्हित किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य

सामाजिक गतिशीलता का विषय न केवल सामाजिक वर्ग भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, से संबंधित है बल्कि लिंग, आयु, नस्ल और जातीयता से भी संबंधित है। एक बहुआयामी घटना के रूप में सामाजिक गतिशीलता पर शोध करने से सामाजिक विद्वानों को विश्व स्तर पर असमानताओं को मजबूत करने से संबंधित समस्याओं की अधिक जटिल समझ प्राप्त होगी। सामाजिक गतिशीलता शिक्षा, व्यवसाय, आय, सामाजिक शक्ति एवं सामाजिक वर्ग आदि क्षेत्रों से सम्बन्धित है। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कोल जनजातीय समाज में शिक्षा के माध्यम से होने वाली सामाजिक गतिशीलता को रेखांकित करना है।

शोध प्रश्न

1– क्या शिक्षा के माध्यम से कोल जनजातीय समाज की आर्थिक प्रस्थिति में बदलाव आया है? 2– क्या कोल जनजाति के राजनैतिक चिंतन में बदलाव हेतु शिक्षा उत्तरदायी है?

3– क्या शिक्षा ने कोल जनजाति के सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया है?

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध एक आनुभाविक अध्ययन है। जनजातीय समाज में व्यक्ति, परिवार, समूह, संस्थायें, इकाइयाँ अनुभव, अन्धविश्वास, परम्पराएँ एवं पारिवारिक जीवन आदि ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं जिनकी माप संख्यात्मक रूप से न हो सकने के कारण प्रायः गुणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। उक्त अध्ययन में तथ्य या सूचना एकत्रीकरण हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत दोनों का प्रयोग किया जायेगा।[10] प्राथमिक स्रोत के रूप में अध्ययन क्षेत्र के चयनित उत्तरदाताओं से शोध विषय से सम्बन्धित सूचनाओं को प्राप्त किया जायेगा। द्वितीयक तथ्यों के संकलन हेतु प्रकाशित व अप्रकाशित प्रलेखों, रिपोर्ट, पुस्तकें, न्यूज रील, समाचार पत्र व पत्रिकाओं में प्रकाशित सूचनाएं व इन्टरनेट आदि का प्रयोग किया जायेगा। सम्पूर्ण रूप से प्रस्तुत अध्ययन में गणनात्मक एवं गुणात्मक पद्धति अर्थात् मिश्रित अध्ययन पद्धति का प्रयोग है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के हनुमना विकासखंड के कोल निवासित 10 गांवों को उद्देश्यपूर्ण विधि से चिन्हित किया गया है। इन गाँवों से 100 व्यक्तियों का यादृच्छिक
प्रतिचयन विधि द्वारा चयन किया गया है।

आंकड़ों का विष्लेशण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध पत्र में कुल 100 उत्तरदाताओं से साक्षात्कार
द्वारा प्रश्नों के उत्तर को संग्रहित करके निम्नलिखित सारणी के अंतर्गत लेखबद्ध किया गया है। सारणी–01: आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

आयु सीमा	संख्या	प्रतिशत	
18	– 40	52	52%
40	– 65	39	39%
65	से ऊपर	09	09%
कुल योग	100	100:	

सारणी–01 में उत्तरदाताओं की आयु को प्रदर्शित किया गया है। इसके अनुसार 52: उत्तरदाताओं की आयु 18 से 40 के मध्य है। इस आयु सीमा तक व्यक्ति समाज में अपनी प्रस्थिति को लगभग सुनिश्चित कर लेता है। 39: उत्तरदाताओं की आयु सीमा 40 से 65 तक ली गई है। उत्तरदाताओं में 09: लोग ऐसे हैं जिनकी आयु 65 से ऊपर है।

तालिका–02: उत्तरदाताओं की शैक्षणिक योग्यता

शैक्षणिक योग्यता	संख्या	प्रतिशत
अषिक्षित	14	14:
शिक्षित (हायर सेकेंडरी)	54	54:
उच्च शिक्षा प्राप्त	32	32:
कुल योग	100	100:

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कोल जनजाति में सामाजिक गतिशीलता पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना है। अतः उत्तरदाताओं की शैक्षिकयोग्यता की जानकारी महत्वपूर्ण है। सारणी–02 के अनुसार 14: उत्तरदाता अशिक्षित हैं जबकि 54: हायर सेकेंडरी तक शिक्षा प्राप्त किए हैं तथा 32: उत्तरदाता उच्च शिक्षा प्राप्त हैं।

सारणी संख्या–03: शिक्षा के माध्यम से आर्थिक प्रस्थिति में परिवर्तन

क्रम संख्या	कुल 100 उत्तरदाताओं से आर्थिक प्रस्थिति गए प्रश्न	हाँ	नहीं	कोई उत्तर नहीं	कुल से सम्बन्धित पूछे प्रतिशत
1	हस्त उद्योग व कौशल सम्बन्धित शिक्षा क्या धनोपार्जन व रोजगार प्राप्ति के अवसरों में बढ़ोत्तरी हेतु सहायक है?	71:	28:	01:	100:

सारणी संख्या–03 तथा चित्र संख्या 01 के अनुसार कोल जनजाति के कुल 100 उत्तरदाताओं में से 71 प्रतिशत लोग शिक्षा के विभिन्न स्वरूपों को धनोपार्जन व रोजगार प्राप्ति के अवसरों हेतु सहायक मानते हैं जो कि बहुमत में है, जबकि 28 प्रतिशत लोगों ने अपनी असहमति प्रदर्शित की है। एक उत्तरदाता ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया है।

सारणी संख्या–04

क्रम संख्या	कुल 100 उत्तरदाताओं से आर्थिक प्रस्थिति से सम्बन्धित पूछे गए प्रश्न	हाँ	नहीं	कोई उत्तर नहीं	कुल प्रतिशत
1	दो पीढ़ियों (पिता व पुत्र) के मध्य क्या शिक्षा के कारण आर्थिक प्रस्थिति में परिवर्तन आया है?				

सारणी संख्या 04 तथा चित्र संख्या–02 से यह प्रदर्शित होता है कि बहुमत के साथ 78: उत्तरदाता यह मानते हैं कि शिक्षा के माध्यम से कोल जनजातीय समाज के आर्थिक प्रस्थिति में लम्बवत (आरोही) गतिशीलता परिलक्षित हुई है। इनमें से 14: उतरदाताओं ने शिक्षा के प्रत्यक्ष प्रभाव को नकारा है साथ ही 8: उत्तरदाताओं ने कोई उत्तर नहीं दिया।

सारणी संख्या–05

क्रम संख्या	कुल 100 उत्तरदाताओं से राजनैतिक प्रस्थिति में परिवर्तन से सम्बन्धित पूछे गए प्रश्न	हाँ	नहीं	कोई उत्तर नहीं	प्रतिशत कुल
1	क्या शिक्षा को जनजातीय समाज को राजनैतिक अधिकारों व कर्तव्यों तथा सरकारी संस्थाओं की कार्य ालियों के प्रति जागरूक करने में सहायक है? ण	56%	43%	01%	100%

सारणी संख्या 05 तथा चित्र संख्या 03 में कोल जनजातीय समाज में शिक्षा के माध्यम से होने वाले राजनैतिक प्रस्थिति में बदलाव को प्रदर्शित किया गया है। इसके अनुसार 56ः कोल जनजाति के लोगों का मानना है कि शिक्षा राजनैतिक अधिकारों व कर्तव्यों तथा सरकारी संस्थाओं की कार्यप्रणालियों के प्रति जागरूक करने में सहायक है जबकि 43ः उत्तरदाताओं ने शिक्षा के प्रभाव को राजनैतिक क्षेत्र में नगण्य माना है। एक उत्तरदाता ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया है।

सारणी संख्या–06

क्रम संख्या	कुल 100 उत्तरदाताओं से राजनैतिक प्रस्थिति में परिवर्तन से सम्बन्धित पूछे गए प्रश्न	हाँ	नहीं	कोई उत्तर नहीं	कुल प्रतिशत
1	क्या कोल जनजाति में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात सामान्य नागरिकों की राजनैतिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ी है?				

सारणी संख्या 06 व चित्र संख्या 04 के अनुसार 46ः उत्तरदाताओं ने इस कथन का समर्थन किया है कि षिक्षित लोगों की राजनैतिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ी है जब कि 48ः उत्तरदाता इससे असमर्थ हैं। 6ः उत्तरदाताओ ने इस प्रश्न के संदर्भ में विचार शून्यता प्रदर्शित की है। उपरोक्त सारणी स्पष्ट करती है कि राजनैतिक स्तर पर कोल जनजाति में अन्तर पीढ़ी गतिशीलता के अंतर्गत लम्बवत अवरोही गतिशीलता परिलक्षित हुई है जो कि कोल जनजाति के युवाओं में राजनीतिक भागीदारी के प्रति उदासीनता को प्रदर्शित करती है।

सारणी संख्या–07

क्रम संख्या	कुल 100 उत्तरदाताओं से सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन से सम्बन्धित पूछे गए प्रश्न	हाँ	नहीं	कोई उत्तर नहीं	कुल प्रतिशत
1	क्या कोल जनजातीय समाज में शिक्षित युवा वर्ग की बढ़ती संख्या के कारण संयुक्त परिवार एकल परिवारों में परिवर्तित हो रहे हैं?				

सारणी संख्या–07 तथा उससे सम्बन्धित चित्र संख्या 05 में संयुक्त परिवारों के विघटन पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इसके अनुसार 81ः उत्तरदाताओं के मतानुसार शिक्षित युवा वर्ग की बढ़ती संख्या के कारण लगभग दो पीढ़ियों के मध्य संयुक्त परिवार एकल परिवारों में परिवर्तित नहीं हो रहे हैं। इसके साथ ही 17ः उत्तरदाताओं ने इसका उत्तर हाँ दिया है। दो लोगों ने कोई उत्तर नहीं दिया है। इस प्रकार कोल जनजाति में सामाजिक स्तर पर परिवारों के स्वरूप में होने वाले परिवर्तन के आधार पर यह सुनिश्चित होता है कि इस संदर्भ में कोल जनजाति में अंतरपीढ़ी गतिशीलता समानान्तर प्रकार की है।

सारणी संख्या–08

क्रम संख्या	कुल 100 उत्तरदाताओं से प्रस्थिति से सम्बन्धित पूछे गए प्रश्न	हाँ	नहीं	कोई उत्तर नहीं	कुल प्रतिशत
1	क्या शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात कोल जनजाति की युवा पीढ़ी अपने परम्परागत धार्मिक अनुष्ठानों व रीति रिवाजों से विमुख हो रहे है?	22%	71%	07%	100%

उपरो सारणी सं या 08 तथा चित्र सं या 06 में 71% उत्तरदाताओं के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात कोल जनजाति की युवा पीढ़ी अपने परम्परागत धार्मिक अनुष्ठानों व रीति रिवाजों से विमुख नहीं हो रहे है जबकि 22% उत्तरदाताओं ने इसका उत्तर हाँ में दिया है। 7% उत्तरदाताओं ने कोई उत्तर नहीं दिया है प्रस्तुत आं ड़ों से यह स्पष्ट है कि वर्तमान कोल जनजातीय युवा पीढ़ी अपने परम्पराओं तथा रीति रिवाजों को आज भी जीवित रखे हुए है अतः कोल जनजाति में धार्मिक स्तर पर समानांतर गतिशीलता परिलक्षित हुई है।

निष्कर्ष– उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक गतिशीलता के सन्दर्भ में विकास की प्रक्रिया व्यक्ति या समूह की प्रस्थिति में उत्थान व पतन को इंगित करती है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट है कि कोल जनजातीय समाज के आर्थिक प्रस्थिति, सामाजिक प्रस्थति तथा सांस्कृतिक प्रस्थिति पर शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। दो पीढ़ियों के मध्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता परिलक्षित हुई है। आधुनिक भारत में शिक्षा को व्यावसायिक अवसरों के प्रवेश द्वार के रूप में देखा जाता है। ज्ञान, अर्थव्यवस्था और सेवा क्षेत्रों के उदय के साथ शैक्षिकयोग्यता महत्वपूर्ण हो गई है। इस बदलाव का सामाजिक गतिशीलता के लिए निहितार्थ है, क्योंकि उच्च शिक्षा बेहतर नौकरी की संभावनाओं और जाति द्वारा निर्धारित पारंपरिक व्यावसायिक भूमिकाओं से मुक्त होने की क्षमता से संबंधित है। शिक्षा के माध्यम से कोल जनजाति के युवाओं को अब रोजगार के नए अवसर प्राप्त हो रहे हैं जिससे इनकी आर्थिक प्रस्थिति में बदलाव देखने को मिलता है जो कि लंबवत तथा आरोही क्रम में है। वर्तमान समय में भी संयुक्त परिवार की संकल्पना को जीवित रखने की प्रेरणा कोल युवा पीढ़ी को परंपरागत शिक्षा के हस्तांतरण से प्राप्त होती है जिसमें वे अपने मूल्यों, रीति रिवाजों, धार्मिक अनुष्ठानों तथा शिक्षा के मध्य सामंजस्य बनाए हुए हैं। इन सबके विपरीत षिक्षित युवा वर्ग राजनैतिक प्रस्थिति के प्रति उदासीन है जबकि धनोपार्जन हेतु विभिन्न क्रियाकलापों में सक्रिय है। युवा वर्ग में राजनैतिक संस्थाओं के प्रति जागरूकता तो है किंतु इनमें भागीदारी की संभावना में कमी है। इस प्रकार यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शिक्षा के माध्यम से कोल जनजाति में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में सम्मिलित रूप से सामाजिक गतिशीलता परिलक्षित होती है।

References

1. Burleigh, Horton Paul & Leigh, Hunt Chester Sociology (1984), Sociology, McGraw Hill.
2. Desai, A.R. (Ed.). (1971). “Essays on Modernization of Underdeveloped Societies”, Bombay: Thakkar & Company. 311-337.
3. Borjas, J. George,(1991), “Ethnic Capital and Intergenerational Mobility”, National Bureau of Economic Research, working paper no.3788

4. Andrea Lizama-Loyola, Denisse Sepúlveda, and Alexandrina Vanke, "Making Sense of Social Mobility in Unequal Societies", Sociological Research Online 2022 27:1, 95-100
5. Nazimuddin, S. (2015), "Social Mobility and Role of Education in Promoting Social Mobility". www.semanticscholar.org/paper/Social-Mobilityand-Role-of-Education-in Promoting-Nazimuddin/
6. Iannelli, Cristina & Paterson, Lindsay. (2005) "Does Education Promote Social Mobility?" www. researchgate.net/publication/228580524_Does_ Education_Promote_Social_Mobility.
7. Brown, Phil & Reay, Diane & Vincent, Carol, (2013), "Education and Social Mobility". British Journal of Sociology of Education, 34. 637-643. DOI:10. 1080/01425692.2013.826414.
8. Vaid, D. (2016). Patterns of social mobility and the role of education in India. Contemporary South Asia, 24, 285-312.
9. Boeri, N.(2021).Upward and Outward Mobility: Women's Aspirations for Their Daughters in Urban India.
10. Arifin, M.H. (2017). The Role of Higher Education in Promoting Social Mobility in Indonesia. European Journal of Multidisciplinary Studies, 6, 233.